अण्डमान निकोबार
द्वीप समाचार
संख्या 116 श्री विजय पुरम, रविवार, 03 मई 2026 web: dt.andaman

उर्वरकों का संतुलित उपयोग–समय की आवश्यकता : आईसीएआर–सीआईएआरआई ने पारिवारिक किसानों को किया जागरूक

श्री विजय पुरम, 2 मई।

(आईसीएआर–सीआईएआरआई), श्री विजय पुरम, के द्वारा 1 मई 2026 को दक्षिण अण्डमान के कालिकट, श्री विजय पुरम में "उर्वरकों का संतुलित उपयोग–समय की आवश्यकता" विषय पर किसान जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य द्वीपीय परिस्थितियों में मृदा एवं जल संरक्षण तथा सतत कृषि के लिए संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन को बढ़ावा देना था।

आईसीएआर–सीआईएआरआई के वैज्ञानिकों की टीम, जिसका नेतृत्व डॉ. एम. मुरुगानन्दम, प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, मत्स्य विज्ञान प्रभाग ने किया, ने फसल उत्पादकता बढ़ाने, उत्पादन लागत कम करने तथा पर्यावरणीय जोखिमों को न्यूनतम करने के लिए जैविक, जैव एवं अकार्बनिक पोषक श्रोतों के समन्वित उपयोग के महत्व पर प्रकाश डाला।

आईसीएआर और भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान में अपने कार्यकाल के दौरान ढालू भूमि एवं उच्च वर्षा वाले क्षेत्रों में कृषि प्रबंधन के व्यापक अनुभव का उल्लेख करते हुए डॉ. मुरुगानंदम ने बताया कि जैविक खादों और जैव उर्वरकों का संतुलित उपयोग, मृदा एवं जल संरक्षण उपायों का प्रभावी पूरक है। उन्होंने मेड़बंदी, ट्रेंचिंग, समोच्च खेती, मल्चिंग, हरी खाद, आवरण फसलें तथा मिश्रित खेती, अंतरवर्तीय खेती और फसल चक्र जैसी उन्नत कृषि प्रणालियों के महत्व पर विस्तार से चर्चा की। ये उपाय विशेष रूप से द्वीपों की उच्च वर्षा और सीमित संसाधनों वाली परिस्थितियों में वर्षा जल अपवाह और मृदा अपरदन को कम करने, नमी संरक्षण, पोषक तत्वों की हानि रोकने तथा फसल उत्पादकता बनाए रखने में अत्यंत सहायक हैं।

शेष पृष्ठ 4 पर

उर्वरकों का संतुलित उपयोग–समय की आवश्यकता

पृष्ठ 1 का शेष

रासायनिक उर्वरकों की वर्तमान कमी तथा उनके अंधाधुंध उपयोग से होने वाले दुष्प्रभावों का उल्लेख करते हुए डॉ. मुरुगानंदम ने जैविक खादों और जैव उर्वरकों के उत्पादन एवं उपयोग में आत्मनिर्भरता की तत्काल आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने वर्मी–कम्पोस्टिंग, गोबर की सड़ी खाद (एफवाईएम) के उत्पादन तथा खेत स्तर पर जैव उर्वरकों के उपयोग को अपनाने की जोरदार अपील की। उन्होंने कहा कि सुदृढ़ एवं सतत कृषि प्रणाली की ओर यह परिवर्तन .षि विकास एजेंसियों, अनुसंधान संस्थानों और किसान समुदाय के समन्वित प्रयासों से ही संभव है।

डॉ. रफीक रहमान अलाइयोडी, वरिष्ठ वैज्ञानिक (पशु आनुवंशिकी एवं प्रजनन), ने आगामी मानसून ऋतु में पशुधन के समक्ष आने वाली प्रमुख स्वास्थ्य चुनौतियों पर चर्चा की तथा पशु उत्पादकता बढ़ाने हेतु आवश्यक निवारक एवं उपचारात्मक उपायों की जानकारी दी।

डॉ. पुनीत पी.वी., वैज्ञानिक (सब्जी विज्ञान), ने सब्जी एवं फल फसलों की उत्पादकता बनाए रखने तथा मृदा स्वास्थ्य संरक्षण के लिए संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने फसलों की विभिन्न वृद्धि अवस्थाओं और पोषक आवश्यकताओं के अनुसार फसल–विशिष्ट उर्वरक प्रबंधन अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

कार्यक्रम के दौरान क्षेत्र की प्रमुख फसलों की पोषक आवश्यकताओं तथा उर्वरक प्रबंधन रणनीतियों को दर्शाने वाला एक प्रदर्शन बैनर प्रदर्शित किया गया, जिससे प्रतिभागियों को विषय की बेहतर समझ प्राप्त हुई। किसानों को रासायनिक उर्वरकों के उपयुक्त विकल्पों के बारे में मार्गदर्शन दिया गया तथा आईसीएआर–सीआईएआरआई एवं इसके कृषि विज्ञान केंद्रों (केवीके) में उपलब्ध जैविक एवं जैव उर्वरक उत्पादन संबंधी प्रशिक्षण अवसरों की जानकारी प्रदान की गई।

इस कार्यक्रम में 25 किसानों, जिनमें 9 महिला किसान तथा 10 युवा किसान शामिल थे, ने सक्रिय भागीदारी की। संवादात्मक सत्र के दौरान प्रतिभागियों ने जैविक एवं जैव उर्वरक आधारित आदानों की उपलब्धता, तैयारी, उपयोग विधि तथा उपयुक्त प्रयोग समय के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त की।